जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

‘‘ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ’’

–सफ़दर हाश्मी

**घोड़ों पर आधारित दो रोचक अलग-अलग कहानियां।
पहली कहानी एक बूढ़े गाड़ीवान और उसके घोड़े के बीच
गहरे प्रेम के बारे में है।
गाड़ीवान आंखों से देख नहीं सकता था
परंतु घोड़ा उसका पथ प्रर्दशक था।
दूसरी कहानी में, दो एक-समान घोड़ियां हैं।
उनमें कौन माँ है और कौन बेटी है इसका पता लगाना है।
पूना के समझदार नाना पेशवा इसका हल कैसे खोजते हैं?**

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए B - 14 Price: 10 Rupees

छिपा रहस्य

क्वैन्टिन रेनाल्ड

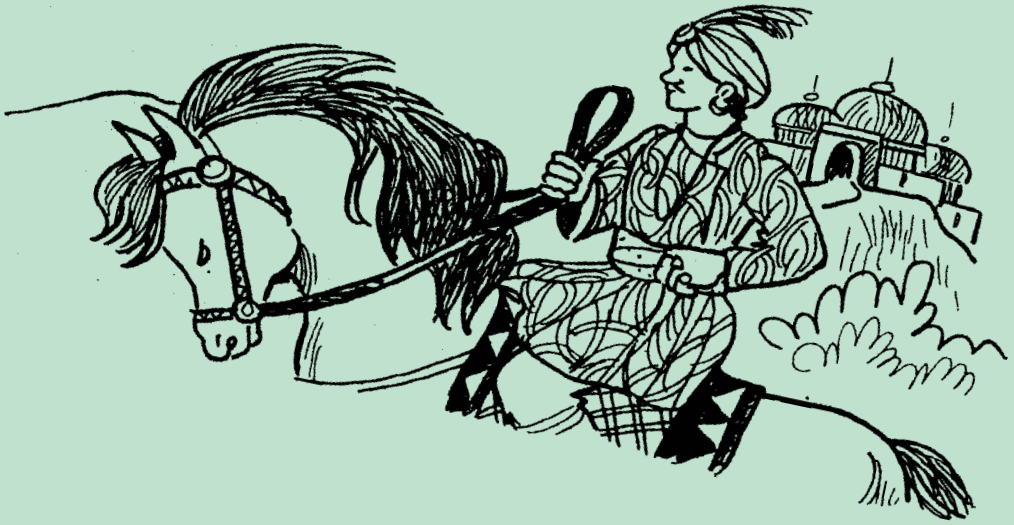

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

छिपा रहस्य : क्वेन्टिन रेनाल्ड
Chipa Rahasya : Quentin Reynold
प्रस्तुति: अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2000,
2002, 2006

मूल्य: 10 रुपए
Price : 10 Rupees

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

छिपा रहस्य

क्वेन्टिन रेनाल्ड

छिपा रहस्य

कनाडा में मौंट्रियल नाम का बड़ा शहर है। वहां कई छोटी-छोटी सड़कें भी हैं। उनमें से एक है एडवर्ड स्ट्रीट। उस सड़क को पियरे जितनी अच्छी तरह और कोई भी नहीं जातना था। उसका एक कारण था। पिछले तीस सालों से पियरे उस सड़क पर बसे सभी परिवारों को दूध बांटता था।

पिछले पंद्रह सालों से पियरे के दूधगाड़ी को एक बड़ा सफेद घोड़ा खींचता था। घोड़े का नाम जोज़फ था। शुरू में जब वह घोड़ा दूध-कम्पनी के पास आया तब उसका कोई नाम नहीं था। कम्पनी ने पियरे को सफेद घोड़े के इस्तेमाल की इज़ाजत दे दी। पियरे ने प्यार से घोड़े की गर्दन को सहलाया और उसकी आंखों में झांक कर देखा।

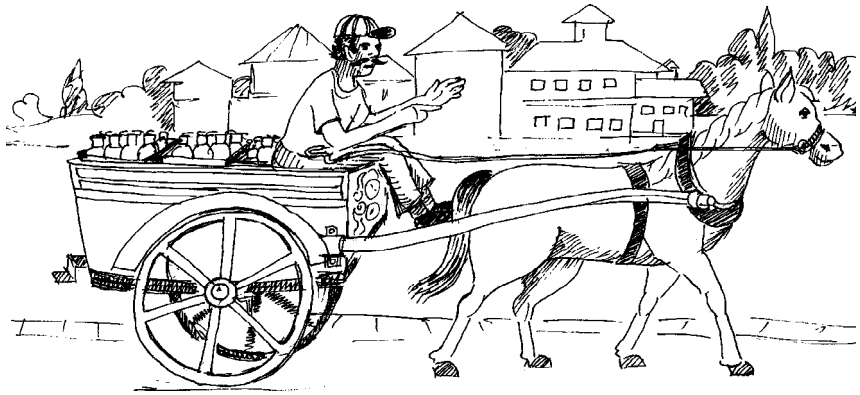

''यह एक समझदार, भला और वफ़ादार घोड़ा है,'' पियरे ने कहा। ''मैं इसका नाम संत जोज़फ के नाम पर रखूंगा, क्योंकि वह एक नेक और दयालु इंसान थे।''

साल भर के अंदर ही घोड़े ने सड़क का पूरा रास्ता रट लिया। पियरे अक्सर शेखी बघारता, ''मैं तो लगाम छूता तक नहीं हूं। मेरे घोड़े को तो लगाम की ज़रूरत ही नहीं है।''

तड़के सुबह पांच बजे ही पियरे दूध की कम्पनी में रोज़ाना पहुंच जाता। तब गाड़ी में दूध लादा जाता और फिर जोज़फ उसे खींचता। पियरे अपनी सीट पर बैठते ही जोज़फ को पुचकारता और घोड़ा अपना मुंह उसकी ओर घुमा देता। आस-पास खड़े अन्य ड्राइवर कहते, ''सब कुछ ठीक-ठाक है पियरे, जाओ।'' इसके बाद पियरे और जोज़फ इत्मीनान के साथ सड़क पर निकल पड़ते।

पियरे के इशारे के बिना ही गाड़ी अपने आप ही एडवर्ड

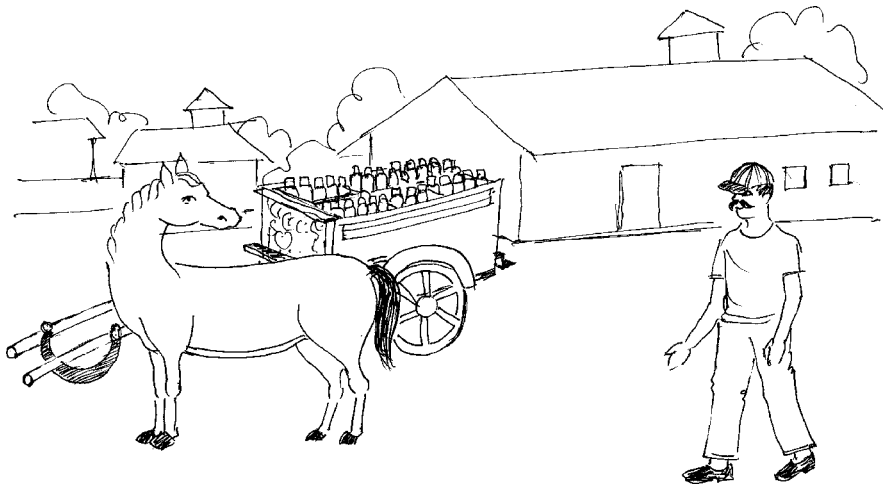

स्ट्रीट पहुंच जाती। फिर घोड़ा पहले घर पर रुकता और पियरे को नीचे उतर कर दरवाज़े के सामने एक बोतल दूध रखने के लिए करीब तीस सेकेंड की मोहलत देता। घोड़ा फिर दूसरे घर पर रुकता।

इस तरह पियरे और घोड़ा पूरी एडवर्ड स्ट्रीट की लंबाई पार करते। फिर गाड़ी को घुमाकर दोनों वापस आते। सचमुच जोज़फ बहुत होशियार घोड़ा था।

अस्तबल में पियरे, जोज़फ की तारीफ करते न थकता। ''मैं कभी उसकी लगाम छूता तक नहीं हूं। कहां-कहां रुकना है यह उसे अच्छी तरह मालूम है। अगर जोज़फ घोड़ागाड़ी खींच रहा है, तो मेरी जगह अगर कोई अंधा आदमी भी हो, तो काम चल जायेगा।''

बरसों तक यही सिलसिला चलता रहा। पियरे और जोज़फ धीरे-धीरे बूढ़े होने लगे। पियरे की मूंछे अब पक

कर सफेद हो गयीं थीं। जोज़फ भी अब अपने घुटनों को उतना ऊंचा नहीं उठा पाता था। अस्तबल के सुपरवाइजर जैक को उनके बुढ़ापे का पता तब चला जब एक दिन पियरे लाठी के सहारे चलता हुआ आया।

''क्या बात है पियरे,'' जैक ने हंस कर पूछा। ''क्या तुम्हारी टांगों में दर्द है?'' ''हां जैक,'' पियरे ने जवाब दिया। ''मैं अब बूढ़ा हो रहा हूं और पैर भी दर्द करने लग गए हैं।''

''बस! तुम अपने घोड़े को दरवाज़े पर दूध की बोतलें रखना सिखा दो,'' जैक ने कहा। ''बाकी सारा काम तो वह करता ही है।''

एडवर्ड स्ट्रीट पर बसे सभी चालीस परिवारों को पियरे अच्छी तरह जानता था। घर के नौकरों को मालूम था कि पियरे लिख-पढ़ नहीं सकता, इसलिए वह उसके लिए कोई चिट्ठी नहीं छोड़ते थे। अगर कभी दूध की और बोतलों की ज़रूरत होती, तो वे घोड़ागाड़ी की आवाज़ सुन कर दूर से ही चिल्लाते, ''पियरे, आज एक और बोतल देना।''

पियरे की याद्दाश्त बहुत अच्छी थी। वापस अस्तबल पहुंच कर बिना गल्ती किये वह जैक को दूध का सारा हिसाब बता देता। जैक अपनी डायरी में तुरंत हिसाब नोट कर लेता था।

एक दिन दूध कम्पनी का मैनेजर सुबह-सुबह अस्तबल

का मुआयना करने पहुंचा। जैक ने पियरे की ओर इशारा करते हुए मैनेजर से कहा, ''ज़रा देखिए तो! पियरे किस तरह अपने घोड़े से बात करता है। और घोड़ा भी कितने प्यार से अपना मुंह घुमा कर पियरे की बात सुनता है। ज़रा घोड़े की आंख की चमक तो देखिए! मुझे लगता है कि इन दोनों में बड़ी गहरी दोस्ती है। इस रहस्य को बस यही दोनों जानते हैं।''

''कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे दोनों हम पर हंस रहे हों। पियरे भला आदमी है, पर बेचारा अब बूढ़ा हो रहा है। क्या मैं आपसे अर्ज़ करूं कि अब आप उसे रिटायर कर दें और उसकी पेंशन बांध दें?'' उसने उत्सुकता से पूछा।

''बात तो तुम्हारी ठीक है,'' मैनेजर ने कहा। ''पियरे अपना काम तीस साल से कर रहा है और कभी कहीं से कोई शिकायत नहीं आई है। उससे कहो कि अब वह घर पर बैठ कर आराम करे। उसे हर महीने पूरी तनख्वाह मिलती रहा करेगी।''

परंतु पियरे ने रिटायर होने से इंकार कर दिया। उसे इस बात से गहरा धक्का लगा कि वह अपने प्यारे घोड़े जोज़फ से रोज़ नहीं मिल पायेगा। ''हम दोनों ही अब बूढ़े हो रहे हैं,'' उसने जैक से कहा। ''हम दोनों अगर इकट्ठे ही रिटायर हों तो अच्छा होगा। मैं आपसे यह वादा करता हूं कि जब मेरा घोड़ा रिटायर होगा तब मैं भी काम छोड़ दूंगा।''

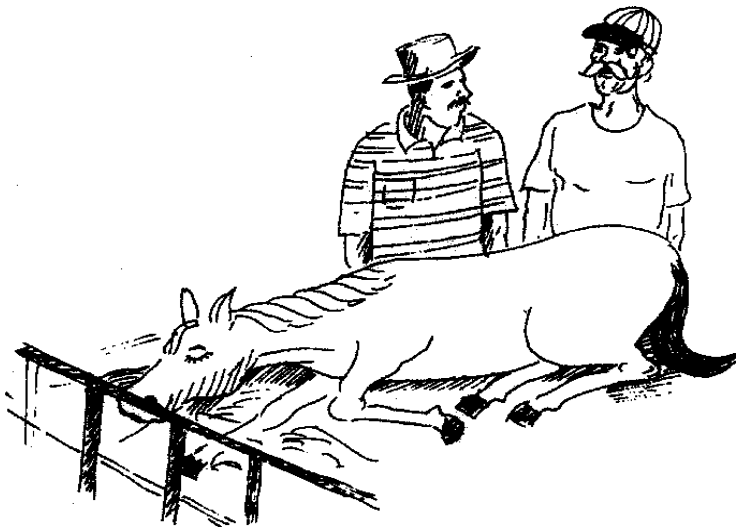

जैक एक भला आदमी था। वह पियरे की बात समझ गया। पियरे और जोज़फ के बीच रिश्ता ही कुछ ऐसा था जिसे देख दुनिया मुस्कुराने लगे। ऐसा लगता था मानों दोनों एक दूसरे का सहारा हों। जब पियरे गाड़ी की सीट पर बैठा हो और जोज़फ गाड़ी खींच रहा हो, तब दोनों में से कोई भी बूढ़ा नहीं लगता था। लेकिन काम खत्म होने के बाद पियरे लंगड़ाते हुए सड़क पर इस तरह धीरे-धीरे चलता, जैसे वह बहुत बूढ़ा आदमी हो। उधर घोड़े का भी मुंह लटक जाता। वह हारा-थका सा अस्तबल वापस जाता।

सुबह-सुबह एक दिन जब पियरे आया तो जैक ने उसे एक बेहद बुरी खबर सुनाई। ''पियरे, आज सुबह जोज़फ सोकर ही नहीं उठा। वह बहुत बूढ़ा हो गया था। 25 साल की उम्र में घोड़े की वैसी ही हालत हो जाती है जैसी 75

साल के बूढ़े आदमी की होती है।''

''हां,'' पियरे ने धीरे से कहा। ''मेरी उम्र अब पिछत्तर साल की है। मैं अब जोज़फ को कभी नहीं देख पाऊंगा।''

''नहीं, तुम उसे देख सकते हो,'' जैक ने दिलासा देते हुए कहा ''वह अभी अस्तबल में है और उसके चेहरे पर बड़ी शांति है। तुम जाकर उसे देख तो लो।''

पियरे घर लौटने के लिए वापस मुड़ा, ''तुम समझोगे नहीं, जैक।'' जैक ने उसका कंधा थपथपाया, ''फिक्र न करो। हम तुम्हारे लिए जोज़फ जैसा ही एक और घोड़ा ढूंढ देंगे। और महीने भर में तुम जोज़फ की तरह उसे भी पूरा रास्ता सिखा देना ... है न ... ।''

पियरे बरसों से एक मोटी टोपी पहनता था। टोपी के हुड से उसकी आंखें लगभग ढंक जाती थीं। जब जैक ने पियरे की आंखों में झांका तो वह सहम गया। उसे उन आंखों में एक निर्जीव भाव दिखाई दिया। पियरे की आंखों से उसके दिल का दर्द झलक रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसका दिल रो रहा हो।

''आज छुट्टी ले लो पियरे,'' जैक ने कहा। परंतु पियरे उससे पहले ही घर वापस चल पड़ा था। अगर कोई उसके पास होता तो वह अवश्य पियरे की आंखों से लुढ़कते आंसू देखता और उसका सुबकना सुनता। पियरे एक कोना पार कर सीधा सड़क पर आ गया। उधर तेज़ी से आते ट्रक के ड्राइवर ने ज़ोर से हार्न बजाया और दबा कर ब्रेक लगाया, लेकिन पियरे को कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

पांच मिनट बाद एम्बुलेंस आई। उसके ड्राइवर ने कहा, ''यह आदमी मर चुका है।''

तब तक जैक और दूध-कम्पनी के कई लोग वहां आ पहुंचे और पियरे के मृत शरीर को देखने लगे।

ट्रक ड्राइवर ने गुस्से में कहा, ''यह आदमी खुद-ब-खुद ट्रक के सामने आ गया। शायद उसे ट्रक दिखा ही नहीं। वह ट्रक के सामने इस तरह आया जैसे उसे कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा हो—जैसे वह एकदम अंधा हो।''

एम्बुलेंस का डाक्टर अब लाश की ओर झुका, ''अंधा! वह आदमी तो सचमुच अंधा था। ज़रा उसकी आंखों का मोतीयाबिंद तो देखो? यह कम से कम पांच साल से अंधा होगा।'' फिर उसने जैक की तरफ मुड़ कर कहा, ''तुम कहते हो कि यह आदमी तुम्हारे लिए काम करता था? तुम्हें नहीं मालूम कि वह अंधा था?''

''नहीं...नहीं,'' जैक ने हल्के से कहा। ''यह रहस्य हम में से किसी को नहीं पता था। सिर्फ उसके दोस्त जोज़फ को पता था...। यह उन दोनों के बीच की आपसी बात थी। सिर्फ...उन दोनों के बीच की।''

□□□

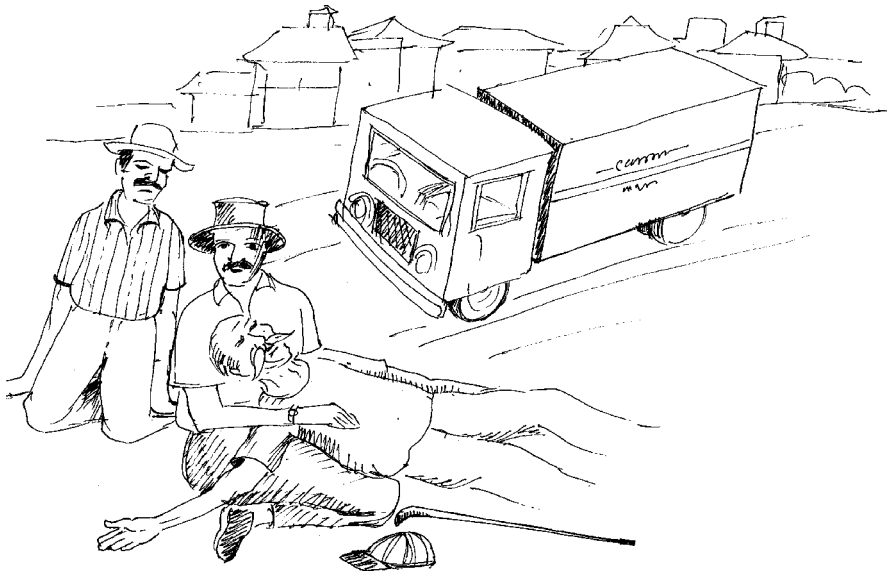

घोड़ियां

एक बार घोड़ों का एक सौदागर पूना आया। वह अपने साथ दो अरबी घोड़ियां लाया था। दोनों जानवर बेहद खूबसूरत थे। उनका रंग दूधिया सफेद था और वह बड़ी उम्दा नस्ल के थे। दौड़ में उन्हें कोई हरा नहीं सकता था।

दोनों जानवर देखने में हू–ब–हू एक जैसे थे। ऐसा लगता था जैसे वे एक ही मटर की फली के दो दाने हों। देश के इस भाग में ऐसे अच्छे जानवर कभी देखने को भी नहीं मिलते थे।

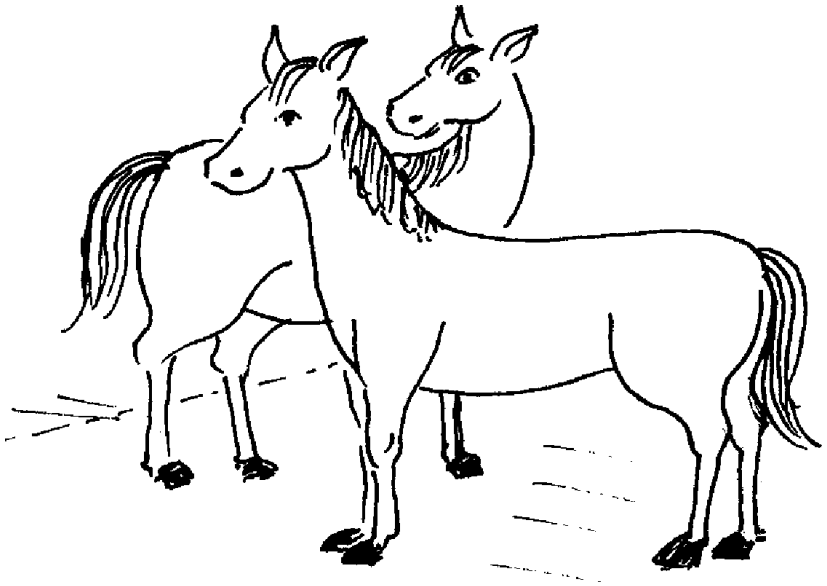

कई लोग उन घोड़ियों को खरीदना चाहते थे। ''इनका दाम बोलो,'' कई खरीदारों ने उस सौदागर से कहा। अच्छी नस्ल की इन घोड़ियों के लिए लोग ऊंची-ऊंची कीमत लगाने लगे। मगर सौदागर उन्हे बेंचने के लिए नहीं लाया था। वह उन्हें पूना के शासक बाजीराव पेशवा को भेंट करना चाहता था। लेकिन एक शर्त पर।

दरअसल दोनों घोड़ियां मां और बेटी थीं। परंतु देखने में दोनों बिल्कुल एक जैसी लगती थीं। यह बता पाना बहुत मुश्किल था कि उनमें कौन मां है, और कौन बेटी।

''मैं एक सरल सा सवाल पूछता हूं,'' सौदागर ने कहा। ''इनमें कौन सी मां है और कौन सी बेटी?''

उत्तर आसान न था। दोनों की एक जैसी ऊंचाई, एक जैसी चाल, एक जैसी आंखें।

''मैंने पूना दरबार की बहुत तारीफ़ सुनी है,'' सौदागर ने मुस्कुराते हुए कहा। ''मैं उसे खुद आज़माने आया हूं। अगर आप दोनों घोड़ियों में अंतर बता पायेंगे तो मैं उन्हें आपको सौंप दूंगा और बाकी की सारी ज़िंदगी आपका प्रशंसक बना रहूंगा''।

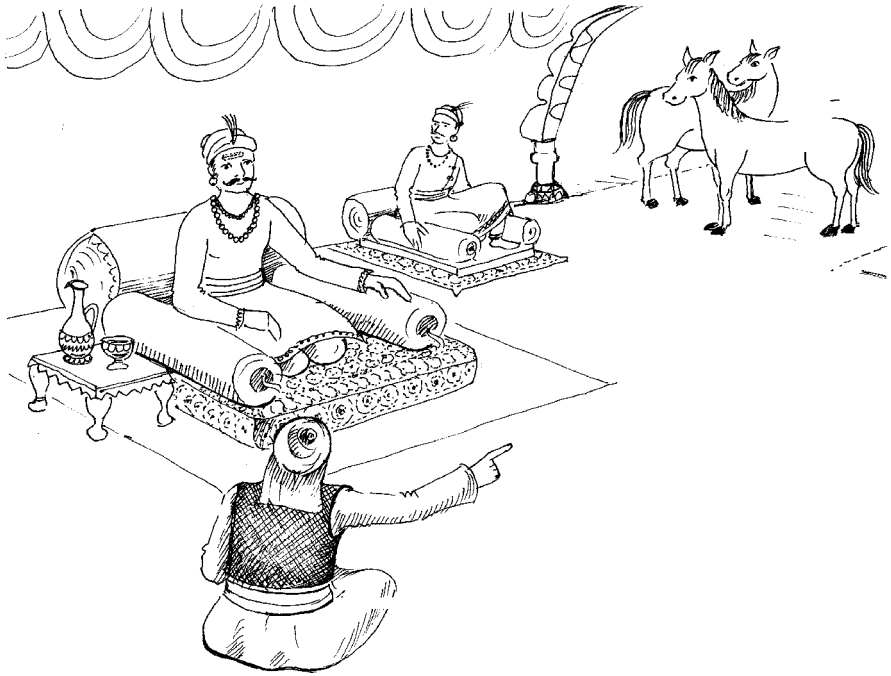

दरबार में सभी की आंखें नाना पर आकर जम गयीं। पेशवा ने नाना को गोद लेकर अपने बेटे की तरह पाला था। यह समस्या बहुत ही कठिन थी और एक बार तो नाना भी उलझन में पड़ गए। सौदागर ने यह भी कहा कि अगर नाना उसके सवाल का सही जवाब नहीं दे पाए तो वह सारी दुनिया में इस बात का ढिंढोरा पीटेगा।

नाना ने इस चुनौती को स्वीकार किया। उन्होंने समस्या के हल के लिए चंद दिनों की मोहलत मांगी। उन दिनों बारिश का मौसम था। नदी के दोनों किनारे पानी के बहाव से उफन रहे थे। बारिश वाले एक दिन, दोपहर के समय नाना ने सौदागर को दोनों घोड़ियां लेकर बुलवाया। फिर

पूरा कारवां उठ नदी की ओर बढ़ा। नदी का जलस्तर खूब चढ़ चुका था। पानी बड़े वेग और जोश के साथ बह रहा था।

''दोनों घोड़ियों को पानी में जाने दो,'' नाना ने कहा। ''उन्हें नदी के दूसरे किनारे पर पहुंचने दो।''

दोनों घोड़ियों को, बाढ़ आई उस नदी में, ज़बरदस्ती धकेला गया। उन्होंने पहले तो एक दो–डुबकियां लगायीं, फिर धीरे–धीरे स्थिर होकर वे कंधे से कंधा मिलाकर उस

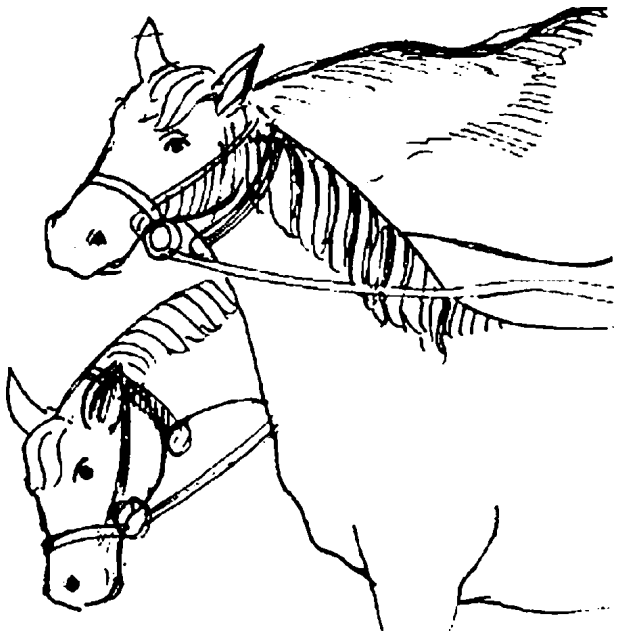

तूफानी नदी में तैरने लगीं। जब वे नदी के बीच में पहुंचीं तो वहां पानी का बहाव बहुत तेज़ था। एक क्षण के लिए दोनों थोड़ा सहमीं। किनारे पर खड़े लोग टकटकी लगाए उन्हें बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। तभी एक घोड़ी ने तेज़ी से आगे बढ़कर रास्ता दिखाया। दूसरी घोड़ी उसके पीछे-पीछे तैरने लगी। ''देखो!'' नाना चिल्लाए। ''वह आगे वाली घोड़ी ही मां है। दोनों में वह अधिक अनुभवी है, इसीलिए मुश्किल की घड़ी में उसी ने अगुवाई करने की ठानी। मां की तरह वह खुद खतरा झेलने को तैयार है। देखो, दोनों उस पार सुरक्षित पहुंच गई हैं।''

हर कोई अब सौदागर का मुंह ताकने लगा। ''क्यों,'' पेशवा ने पूछा, ''क्या नाना ने सही बताया?''

''परवरदिगार'' सौदागर ने कहा, ''ये शाही जानवर अब आपके हैं।''

❐❐❐